भारतीय संस्कृति का विदेशों में विस्तार एवं प्रभाव

डॉ0 उत्तम सिंह

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय संस्कृति का काफी प्रचार–प्रसार हुआ है। आज हमारी संस्कृति विदेशों में भी प्रस्फुटित है। सारी दुनिया भारतीय संस्कृति से परिचित हो रही है और इस संस्कृति की अक्षुण्ता से अभिभूत है, किन्तु इस सत्य को नकारा नहीं जा सकता कि किसी किसी भी देश को अस्थिर, कमजोर और विघटित करने के लिए सबसे पहले उसकी संस्कृति पर हमला किया जाता है। जब संस्कृतियाँ तहस–नहस होती है तो सभ्यता कमजोर पड़ती है, समाज संक्रमित होता है और राष्ट्र का पराभव होने लगता है। इतिहास गवाह है कि भारत पर ऐसे हमले न सिर्फ बराबर होते आये हैं, बल्कि आज भी जारी हैं। भले ही इन हमलों के रूप अलग हों। प्राचीन भारतीय संस्कृति पर मध्यकाल में हमले हुए, अंग्रेजों ने भी हमारी संस्कृति को नष्ट करना चाहा, जिसका असर भी पड़ा। आज आंग्ल संस्कृति का प्रभाव हमारी संस्कृति पर काबिज है। फिर भी इन झंझावातों के बीच हम अपनी मूल संस्कृति पर कायम है तथा जो प्रभाव आक्रांताओं ने डाला उससे उबरने में भी लगे हैं। इसलिए सभ्यता के स्तर पर भी हम संक्रमित नहीं हो पाये हैं, क्योंकि हमारी उन्नति संस्कृति का रक्षा कवच हमारे साथ है। इतना ही नहीं, संस्कृतियों के टकराव व संघर्ष से नजदीकियाँ भी बढ़ी है। अच्छे मूल्यों एवं उपयोगी तत्वों का आदान–प्रदान भी हुआ। ''जो जिससे मिला, सीखा हमने'' की तर्ज पर जो आत्मसात करने योग्य था, उसे किया।जहाँ हमने दूसरी संसृतियों से अच्छे और सूक्ष्म तत्वों को ग्रहण किया, वहीं दूसरों को देने में हम बहुत आगे रहे। आज भी हमारी संस्कृति का डंका सारे विश्व में बज रहा है। लोग भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख है। अवसाद, नैराश्य और अशांति में डूबे पश्चिमी देशों के लोग भारतीय संस्कृति में जीवन का रस और दर्शन खोज रहे है। वे हमारी संस्कृति के कायल हो रहे हैं और बहुत सारी खूबियों को अपना रहे हैं।